Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 7, July - 2026

DOIs:10.2018/SS/202607003 --:-- Research Paper / Article / Review

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता का उनके सामाजिक - आर्थिक स्तर के संदर्भ में अध्ययन

डॉ. विभा यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी. एड. विभाग, एम. वी. डी. सी. लखनऊ
vibhayadav265@gmail.com

सारांश : किसी व्यक्ति की सामाजिक-आर्थिक अवस्था समाज के लोगों में उसकी प्रतिष्ठा, इज्ज़त और ताकत (आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक आदि) को कहते हैं। यह मूल्यांकन से सम्बंधित एक विषय है जो यह बताता है कि कोई व्यक्ति सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से कितना समृद्ध है। यह उसके जीवन स्तर और सोच को भी दर्शाता है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के साथ ही साथ समग्र मानव कामकाज को भी प्रभावित करता है। यह धन, आय के वितरण में असमानता के रूप में सामाजिक-आर्थिक स्थिति में विचरण और संसाधनों का प्रयोग अंततः हर किसी को प्रभावित कर सामाजिक समस्याओं को उत्पन्न करते हैं। अतः सामाजिक आर्थिक असमानता और सामाजिक-आर्थिक स्थिति में घनिष्ठ अंतराल को कम करने का प्रयास अत्यधिक लाभदायी होगा। सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रभाव, बच्चों पर, उनके परिवार तथा समाज पर सकारात्मक रूप से पड़ता है। यह बच्चे को सामाजिक परिपक्वता की ओर अग्रसर करते हैं। उपरोक्त अध्ययन स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता का उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन करने हेतु प्रेरित करती है। जिससे विद्यार्थी स्वयं के सामाजिक-आर्थिक स्तर को उच्च उठाने तथा सामाजिक रूप से परिपक्व होने में सक्षम हो सके।

शब्द संकेत: स्नातक स्तर, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, सामाजिक परिपक्वता ।

1. प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, बिना समाज के उसके अस्तित्व की कल्पना करना मुश्किल है। माता-पिता, परिवार के सदस्य, पड़ोसी तथा समाज के सम्मानित व्यक्ति मनुष्य से यह आशा रखते हैं कि वह समाज में उचित ढंग से कार्य करेगा और समाज में समन्वयता बनाये रखेगा। मनुष्य की यह क्षमता कि वह समाज के नियमों को समझे तथा संस्कृति और योग्यता से अपने ज्ञान को प्रभावित करे, उसकी 'सामाजिक परिपक्वता कहलाती है। सामाजिक-आर्थिक अवस्था के अंतर्गत किसी व्यक्ति की पारिवारिक अवस्था माता-पिता की शिक्षा, पेशा अथवा व्यवसाय आय, जाति, रहने का स्थान, सम्पत्ति का स्वामित्व, प्रचलित क्लबों की सदस्यता, राजनीतिक सम्बन्ध आदि आते हैं। सामाजिक-आर्थिक अवस्था के अन्तर्गत किसी व्यक्ति की पारिवारिक अवस्था माता-पिता की शिक्षा, पेशा अथवा व्यवसाय, आय, जाति, रहने का स्थान, सम्पत्ति का स्वामित्व, प्रचलित क्लबों की सदस्यता, राजनीतिक सम्बंध आदि आते हैं।

बाल विकास के क्षेत्र में सर्वप्रथम अर्नोल्ड गेसेल (1925) ने परिपक्वता सिद्धांत को प्रस्तुत किया। गेसेल के अनुसार, परिपक्वता शरीर की आंतरिक व्यवस्था के कारण उत्पन्न स्नायुओं और माँसपेशियों की प्रौढ़ता और दृढ़ता है जिस पर वाह्य वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप ही शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से जीव की वृद्धि पूर्ण और सुदृढ होती है। 'सामाजिक परिपक्वता', सामाजिक रूप से परिपक्व होने की एक लम्बी व जटिल प्रक्रिया है, जो बालकों को उन मूल्यों, आदर्शों व तथ्यों से अवगत कराती है जिसके अनुरूप वह बांछित व्यवहार कर सकें। वह वांछित व्यवहार जो उसके माता-पिता, परिवार के सदस्य, पड़ोसी तथा समाज के सम्मानित व्यक्ति उससे आशा रखते हैं कि वह समाज में सामाजिक नियमों को समझे तथा उसी के अनुकूल उचित ढंग से कार्य करें और समाज में समन्वयता बनाये रखें।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति को शिक्षा, आय और व्यवसाय का एक संयोजन के रूप में माना जाता है। यह आमतौर पर एक व्यक्ति या समूह की सामाजिक स्थिति या वर्ग के रूप में स्थिति की अवधारणा है। एक सामाजिक वर्ग के माध्यम से देखा जाये तो इसके अन्तर्गत

विशेषाधिकार, शक्ति और नियंत्रण पर बल दिया जाता है। दूसरा, आर्थिक वर्ग के माध्यम से देखा जाये तो इसके अन्तर्गत पारिवारिक अवस्था आय, सम्पत्ति का स्वामित्व, संसाधनों की उपलब्धता आदि आते हैं।

2. उद्देश्य

1. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर के छात्रों में सामाजिक परिपक्वता एवं सामाजिक आर्थिक स्तर में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर की छात्राओं में सामाजिक परिपक्वता एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
4. उच्च एवं निम्न वर्ग के सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. उच्च एवं निम्न वर्ग के सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्रों में सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. उच्च एवं निम्न की सामाजिक-आर्थिक स्तर की छात्राओं में सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. परिकल्पना

1. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता का उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर में कोई सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं है।
2. स्नातक स्तर के छात्रों में सामाजिक परिपक्वता का उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर में कोई सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं है।
3. स्नातक स्तर की छात्राओं में सामाजिक परिपक्वता का उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर में कोई सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं है।
4. उच्च एवं निम्न वर्ग के विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. उच्च एवं निम्न वर्ग के छात्रों के सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. उच्च एवं निम्न वर्ग की छात्राओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान' विधि का प्रयोग किया गया है। शोध के न्यादर्श हेतु लखनऊ विश्वविद्यालय के बी०ए० प्रथम वर्ष एवं बी०एस०सी० प्रथम वर्ष की 80 छात्र व 80 छात्राओं का चुनाव किया गया।

संकाय				
कला		विज्ञान		कुल
छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	
40	40	40	40	160

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन हेतु आर०पी० श्रीवास्तव द्वारा निर्मित सामाजिक परिपक्वता मापनी तथा आर०पी० वर्मा, पी०सी० सक्सेना तथा श्रीमती उषा मिश्रा जी द्वारा निर्मित 'सामाजिक-आर्थिक स्तर सूची का प्रयोग शोध उपकरण हेतु किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधि

टी-परीक्षण एवं 'गुणनफल आघूर्ण सह-सम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया।

5. प्रदत्त विश्लेषण

तालिका 1

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता एवं सामाजिक आर्थिक स्तर में सम्बन्ध

समूह	संख्या	सहसम्बन्ध गुणांक का मान (r)	स्वतंत्र्यांश (df)	सार्थकता स्तर
स्नातक स्तर के विद्यार्थी	160	0.79	158	0.05

ISSN(o): 2581-6241
Impact Factor: 9.134

तालिका-1 दर्शाती है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर मे सह-सम्बन्ध गुणांक का मान 0.79 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक होने के लिए आवश्यक मान 0.138 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जा सकती है।

तालिका-2

स्नातक स्तर के छात्रों में सामाजिक परिपक्वता का उनके सामाजिक आर्थिक स्तर में सहसम्बन्ध

समूह	संख्या	सहसम्बन्ध गुणांक का मान (r)	स्वतंत्र्यांश (df)	सार्थकता स्तर
स्नातक स्तर के छात्र	80	0.033	78	0.05

तालिका-2 दर्शाती है कि सामाजिक परिपक्वता और सामाजिक-आर्थिक स्तर में सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.033 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक होने के लिए आवश्यक मान 0.217 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जा सकती है।

तालिका - 3

स्नातक स्तर के छात्राओं में सामाजिक परिपक्वता का उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर में सहसम्बन्ध

समूह	संख्या	सहसम्बन्ध गुणांक का मान (r)	स्वतंत्र्यांश (df)	सार्थकता स्तर
स्नातक स्तर की छात्राएँ	80	0.1207	78	0.05

तालिका-3 दर्शाती है कि सामाजिक परिपक्वता और सामाजिक-आर्थिक स्तर में सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.1207 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक होने के लिए आवश्यक मान 0.217 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जा सकती है।

तालिका - 4

उच्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता में अंतर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-अनुपात

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-अनुपात
उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर	28	129.34	18.266	1.315
निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर	28	123.31	16.591	

तालिका-4 दर्शाती है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 129.34 तथा मानक-विचलन 18.266 है तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 123.31 तथा मानक विचलन 15.591 है।

तालिका-5

उच्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता में अंतर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-अनुपात

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-अनुपात
उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर	14	124.79	17.075	1.146
निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर	13	117.38	16.429	

तालिका-5 दर्शाती है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 124.79 तथा मानक-विचलन 17.075 है तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 117.38 तथा मानक विचलन 16.429 है।

तालिका-6
उच्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर की छात्राओं में सामाजिक परिपक्वता में अंतर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-अनुपात

समूह	संख्या	माध्यमान	मानक विचलन	टी- अनुपात
उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर	14	133.90	18.886	1.381
निम्न सामाजिक आर्थिकस्टार	14	124.32	16.047	

'तालिका-6 दर्शाती है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर की छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 133.90 तथा मानक विचलन 18.186 है तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर की छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 124.32 तथा मानक विचलन 16.047 है।

6. विवेचन

इस अध्ययन से यह विदित हुआ कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर में सकारात्मक सह-सम्बन्ध है। अर्थात जैसे-जैसे विद्यार्थियों का सामाजिक-आर्थिक स्तर उच्च होगा उनकी सामाजिक परिपक्वता भी बढ़ेगी। क्योंकि यदि बालक की सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताएँ पूर्ण होगी तो बालक पूर्ण रूप से विकसित होगा अर्थात् वह सामाजिक रूप से भी परिपक्व होगा। इसके विपरीत यदि बालक की सभी सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताएँ पूर्ण नहीं होगी तो उसमें कुण्ठा व हताशा का भाव उत्पन्न होगा जो उसको पूर्ण रूप से विकसित होने व परिपक्व होने में बाधक का कार्य करेगा अर्थात् बालक सामाजिक रूप से परिपक्व होने में अक्षम होगा। अतः सामाजिक परिपक्वता एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर में सकारात्मक सह सम्बन्ध है।

परिणाम से यह भी ज्ञात हुआ कि स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं में सामाजिक परिपक्वता का उनके सामाजिक आर्थिक स्तर में कोई सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि कुछ छात्र-छात्राओं की यदि समस्त सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताएँ पूर्ण भी होती तो भी वह सामाजिक रूप से परिपक्व नहीं होते हैं।

परिणाम से यह भी ज्ञात हुआ है कि उच एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता एक समान है। क्योंकि कुछ विद्यार्थियों को समस्त सामाजिक-आर्थिक आवश्यकताएँ पूर्ण होने पर वह सामाजिक परिपक्व होते हैं तथा कुछ विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकताएँ पूर्ण न होने के कारण भी वह सामाजिक रूप से परिपक्व हो जाते हैं क्योंकि वह अपने को इस योग्य बनाने में निरंतर प्रयासरत रहते हैं यह प्रयास अथवा परिश्रम ही उनको परिपक्व बना देती है।

7. निष्कर्ष

- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर में सकारात्मक सहसम्बन्ध है।
- स्नातक स्तर के छात्रों में सामाजिक परिपकल्पना का उनके सामाजिक आर्थिक स्तर में कोई सम्बन्ध नहीं है।
- स्नातक स्तर की छात्राओं में सामाजिक परिपक्वता का उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर में कोई सम्बन्ध नहीं है।
- उच्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले छात्रों की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अस्थाना, ए० (1989). एक स्टडी ऑफ सोशल मैच्योरिटी अमंग स्कूल गोइंग चिल्ड्रेन इन दि सिटी ऑफ लखनऊ, इन फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन (1988-1992), ई. बुच, एमबीर (सम्पादक), न्यू दिल्ली, डीआईक्यूएस, जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड साइकोलॉजी, 48 (3-4), 145-155

2. एन्जीनेन्ट, एच एण्ड मैन, ए० (1989). इन्टेलिजेन्स, जेण्डर, सेशल मैच्योरिटी एण्ड सोशल रेडीवेत्त इन डच फर्स्ट ग्रेडर्स, सोशल बिहेवियर एण्ड पर्सनालिटीः एन० इण्टरनेशनल जर्नल, 17 (1), 205

3. बोरा, जे०आई० (1980). एन इन्वेस्टीगेशन इन टू सोशल मैच्योरिटी ऑफ स्टेडेन्ट्स ऑफ कॉलेज ऑफ एजूकेशनल इन दि कॉन्टेक्स्ट ऑफ सम साइको-सोशियो कोरिलेट्स, थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन (1978-1983), वुच, एम०बी० (सम्पादक) न्यू दिल्ली, एनसीईआरटी

4. कानेको, एफ०एण्ड ओकामुरा, एच० (2006). स्टडी ऑन दि सोशल मेच्योरिटी, सेल्फ परसेप्शन, एण्ड एसोशिएटेड फैक्टर्स, इन्क्लुडिंग मोटर कॉर्डिनेशनल, ऑफ चिल्ड्रेन विथ अटेन्शन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर, फिज़िकल एण्ड ऑक्यूपेशनल थेरेपी इन पेडिएट्रिक्स, 25 (4), 45-58

5. गैसेल, ए. (1925). दी मेंटल ग्रोथ ऑफ द प्री-स्कूल चाइल्ड: अ साइकोलॉजिकल आउटलाइन ऑफ नॉर्मल डेवलपमेंट फ्रॉम बर्थ टू द सिक्स्थ ईयर, इंक्लुडिंग अ सिस्टम ऑफ डेवलपमेंट शेड्यूल्स. मैकमिलन

6. चाँद, आर० (2007). सोशल मैच्योरिटी अमंग स्टूडेन्ट्स टीचर्स, एजूकेशन न्यू हारिजन्स, 4 (14). 18-25

7. जयराज, ए.जी. एंड जयश्री, पी. (2026) रिलेशनशिप अमोंग सोशियो-इकोनामिक स्टेटस, सोशल मेच्योरिटी एंड स्ट्रेस टोलरेंस अमोंग अंडरग्रैजुएट स्टूडेंट्स. द एकेडमिक: इंटरनेशनल जनरल ऑफ़ मल्टीडिसीप्लिनरी रिसर्च, 4(4), 106–112.
DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19875315

8. पुरोहित, वी.पी. (2020). ए स्टडी ऑफ़ सोशल मैच्योरिटी अमोंग कॉलेज स्टूडेंट्स. द इंटरनेशनल जनरल ऑफ़ इंडियन साइकोलॉजी, 8(1), 929–934.
https://www.google.com/url?sa=i&source=web&rct=j&url=https://ijip.in/wp-content/uploads/2020/04/18.01.116.20200801.pdf

9. फाटक, पी०, रंगनाथन, एच०एन० एण्ड देशपाण्डे, ए० (1995). डवलेपमेण्ट ऑफ सोशल मेच्योरिटी ड्यूरिंग इनफेंसी एण्ड इट्स रिलेशन टू इनवायरमेण्डल कम्पोनेन्ट्स एण्ड मोटर एण्ड मेन्टल डेवलपमेन्ट, साइकोलॉजिकल स्टडीज, 39, 66-72

10. मुलिया, आर०डी० (1991) ए कम्पैरेटिव स्टडी ऑफ सोशल मैच्योरिटी ऑफ हायर सेकण्ड्री स्टूडेन्ट्स इन कॉन्टेक्स्ट ऑफ देअर स्ट्रिम्स, सेक्स एण्ड डीआईक्यूएस, जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड साइकोलॉजी, 48 (3-4), 145-155

11. सबापथी, टी० (1986). ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप ऑफ मेनीफेस्ट एनाजाइटी एण्ड इमोशनल मेच्योरिटी ऑफ स्टैण्डर्ड एक्स स्टूडेण्डट्स ऑफ देअर एकेडेमिक अचीवमेंट, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन (1983-88).८. बुच, एम०बी० (सम्पादक), न्यू दिल्ली, एनसीईआरटी